International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XIII, Issue V, September– October 2026 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.999

"जैविक कृषि का कृषकों की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन: मध्यप्रदेश के सीधी जिले के विशेष संदर्भ में"

डॉ. निशार अहमद नूरी
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
शासकीय महाविद्यालय, जयसिंहनगर, जिला शहडोल, मध्यप्रदेश

***सारांश*:-**वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र के समक्ष उत्पादन लागत में वृद्धि, मृदा की उर्वरता में कमी, रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर निर्भरता तथा कृषकों की आय में अनिश्चितता जैसी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन परिस्थितियों में जैविक कृषि को एक वैकल्पिक एवं टिकाऊ कृषि पद्धति के रूप में देखा जा रहा है। जैविक कृषि में रासायनिक उर्वरकों एवं कृत्रिम कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद, जैव उर्वरक तथा प्राकृतिक कीट प्रबंधन विधियों का उपयोग किया जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य जैविक कृषि के कृषकों की आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों का अध्ययन करना है, जिसमें मध्यप्रदेश के सीधी जिले को विशेष संदर्भ के रूप में लिया गया है। अध्ययन में कृषि लागत, उत्पादन, सकल आय, शुद्ध आय, लाभ-लागत अनुपात, विपणन व्यवस्था तथा कृषकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे पहलुओं को सम्मिलित किया गया है। शोधपत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों एवं प्रकाशित अध्ययनों के विश्लेषण पर आधारित है। उपलब्ध राष्ट्रीय स्तर के शोध से संकेत मिलता है कि जैविक कृषि में उत्पादन लागत कम हो सकती है, परंतु कुछ फसलों में प्रारंभिक अवस्था में उत्पादन में कमी भी आ सकती है। मध्यप्रदेश के 1,776 कृषकों पर आधारित एक आधारभूत अध्ययन में जैविक एवं प्राकृतिक कृषि के परिणामों को कृषि पद्धति, जैविक निवेश की मात्रा तथा फसल प्रणाली के संदर्भ में समझने की आवश्यकता बताई गई है। अतः जैविक कृषि का आर्थिक प्रभाव सभी क्षेत्रों में समान नहीं होता, बल्कि यह स्थानीय संसाधनों, फसल चयन, बाजार व्यवस्था और कृषक के प्रबंधन कौशल पर निर्भर करता है। सीधी जिले के लिए वास्तविक प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित क्षेत्रीय अध्ययन इस विषय की अधिक स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत कर सकता है।

मुख्य शब्द:- जैविक कृषि, कृषक आय, कृषि लागत, शुद्ध लाभ, टिकाऊ कृषि, सीधी जिला, मध्यप्रदेश।

प्रस्तावना:-

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार और खाद्य सुरक्षा का प्रमुख आधार है। देश की बड़ी आबादी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं उससे संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए हरित क्रांति के बाद रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, उन्नत बीजों तथा सिंचाई सुविधाओं का व्यापक उपयोग किया गया। इससे अनेक क्षेत्रों में खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई, लेकिन इसके साथ ही कृषि लागत में वृद्धि, मृदा स्वास्थ्य में गिरावट, जल प्रदूषण तथा पर्यावरणीय असंतुलन जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। इन समस्याओं के समाधान के लिए जैविक कृषि की अवधारणा महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। जैविक कृषि ऐसी उत्पादन प्रणाली है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, मृदा की जैविक सक्रियता, जैव विविधता तथा पर्यावरणीय संतुलन को प्राथमिकता दी जाती है। इसमें गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद, फसल चक्र, मिश्रित खेती और जैविक कीट नियंत्रण जैसी विधियों का प्रयोग किया जाता है।

जैविक कृषि का उद्देश्य केवल रासायनिक पदार्थों का उपयोग कम करना नहीं है, बल्कि कृषि को दीर्घकालीन रूप से टिकाऊ बनाना भी है। तथापि, कृषकों के लिए किसी भी कृषि पद्धति की उपयोगिता का निर्धारण उसके आर्थिक परिणामों से भी होता है। यदि जैविक कृषि से उत्पादन

लागत कम होती है, उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त होता है और शुद्ध आय में वृद्धि होती है, तो यह कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार का माध्यम बन सकती है।

मध्यप्रदेश के सीधी जिले की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिले में धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार, तिलहन, दलहन एवं सब्जियों जैसी फसलों की खेती की जाती है। NABARD की सीधी जिले की क्षेत्र विकास योजना में छोटे एवं सीमांत कृषकों की उल्लेखनीय संख्या तथा कृषि पर ग्रामीण आजीविका की निर्भरता का उल्लेख मिलता है। इस पृष्ठभूमि में जैविक कृषि के आर्थिक प्रभाव का अध्ययन महत्त्वपूर्ण हो जाता है। कृषि में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के निरंतर उपयोग से कृषकों की उत्पादन लागत में वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव की समस्या उत्पन्न हुई है। दूसरी ओर, जैविक कृषि को कम लागत, पर्यावरण संरक्षण और बेहतर बाजार मूल्य प्राप्त करने की संभावनाओं से जोड़ा जाता है। फिर भी जैविक कृषि अपनाने के दौरान कृषकों को जैविक खाद की उपलब्धता, श्रम की आवश्यकता, उत्पादन में संभावित कमी, प्रमाणन, विपणन और उपभोक्ताओं तक पहुँच जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

सीधी जिले के संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि जैविक कृषि अपनाने से कृषकों की कृषि लागत, उत्पादन, शुद्ध आय और आर्थिक सुरक्षा पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ सकता है। प्रस्तुत शोधपत्र इसी समस्या का विश्लेषण करता है।

अध्ययन के उद्देश्य-

1. जैविक कृषि की अवधारणा एवं महत्त्व का अध्ययन करना।
2. जैविक कृषि और परंपरागत कृषि की आर्थिक विशेषताओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
3. कृषि लागत, उत्पादन, सकल आय तथा शुद्ध आय पर जैविक कृषि के संभावित प्रभावों का अध्ययन करना।
4. जैविक कृषि अपनाने में कृषकों के समक्ष आने वाली प्रमुख समस्याओं की पहचान करना।
5. सीधी जिले में जैविक कृषि के विस्तार हेतु उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्य समीक्षा:-

Reddy et.al., (2022) ने *"Economic Impact of Organic Agriculture: Evidence from a Pan-India Survey"* शीर्षक से प्रकाशित अध्ययन में भारत के 576 जैविक कृषि समूहों के आँकड़ों का विश्लेषण किया। अध्ययन में गेहूँ, धान और सोयाबीन जैसी फसलों के संदर्भ में जैविक एवं परंपरागत कृषि की लागत, उत्पादन और लाभ की तुलना की गई। अध्ययन के अनुसार जैविक कृषि में उत्पादन लागत लगभग 14 से 19 प्रतिशत कम तथा उत्पादन लगभग 12 से 18 प्रतिशत कम पाया गया। इसके बावजूद कुछ फसलों में लाभ में मामूली वृद्धि दर्ज की गई। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि जैविक कृषि का आर्थिक परिणाम केवल उत्पादन लागत पर नहीं, बल्कि उत्पादन और बाजार मूल्य पर भी निर्भर करता है।

Muthuprakash & et.al., (2025) मध्यप्रदेश के 11 कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों में 1,776 कृषकों पर आधारित इस अध्ययन में रासायनिक, गैर-कीटनाशक प्रबंधन तथा जैविक कृषि पद्धतियों की तुलना की गई। अध्ययन में बताया गया कि जैविक निवेश के उचित स्तर पर कुछ परिस्थितियों में जैविक कृषि का कुल उत्पादन रासायनिक कृषि के बराबर अथवा उससे अधिक हो सकता है। अध्ययन ने यह भी संकेत दिया कि कृषि पद्धति के परिणामों को समझने के लिए बहुफसली प्रणाली और जैविक निवेश की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

NABARD की सीधी जिला क्षेत्र विकास योजना- NABARD की सीधी जिले की क्षेत्र विकास योजना 2018–23 में जिले की कृषि संरचना, छोटे एवं सीमांत कृषकों की स्थिति तथा कृषि आधारित आजीविका का

विवरण दिया गया है। योजना में लगभग 2,06,000 कृषकों तथा इनमें लगभग 1,38,000 छोटे एवं सीमांत कृषकों का उल्लेख है। ये आँकड़े योजना के संदर्भ काल के हैं, वर्तमान जनगणना या अद्यतन जिला आँकड़े नहीं माने जाने चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि सीधी जिले में छोटे एवं सीमांत कृषकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय:-

प्रस्तुत अध्ययन के लिए मध्यप्रदेश के सीधी जिले का चयन किया गया है। जिला मुख्यतः ग्रामीण एवं कृषि आधारित अर्थव्यवस्था वाला क्षेत्र है। यहाँ की कृषि में खरीफ एवं रबी दोनों मौसमों की फसलों का महत्त्व है। धान, गेहूँ, मक्का, दलहन, तिलहन और सब्जियाँ प्रमुख कृषि गतिविधियों में शामिल हैं। जिले में छोटे एवं सीमांत कृषकों की उपस्थिति को देखते हुए कृषि लागत, श्रम, सिंचाई, बाजार और कृषि तकनीक तक पहुँच जैसे कारक कृषकों की आय को प्रभावित कर सकते हैं। जैविक कृषि के आर्थिक प्रभाव का अध्ययन इन स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

शोध पद्धति:-

प्रस्तुत शोधपत्र का वर्तमान प्रारूप प्रकाशित साहित्य, सरकारी दस्तावेजों तथा उपलब्ध द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। सीधी जिले के कृषकों से प्राथमिक सर्वेक्षण अभी नहीं किया गया है। इसलिए इस प्रारूप में जिले के कृषकों के वास्तविक औसत उत्पादन, आय अथवा लाभ के संबंध में कोई काल्पनिक आँकड़ा प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्राथमिक स्रोत: भविष्य में चयनित गाँवों के जैविक एवं परंपरागत कृषकों से संरचित प्रश्नावली और व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए हैं।

द्वितीयक स्रोत: शोध पत्रिकाएँ, कृषि विभाग की रिपोर्टें, NABARD की जिला योजनाएँ, सरकारी प्रकाशन तथा जैविक कृषि से संबंधित प्रकाशित शोध।

प्रस्तावित नमूना चयन

प्राथमिक सर्वेक्षण के लिए कुल 100 कृषकों का प्रस्तावित नमूना रखा जा सकता है। इसमें 50 जैविक कृषि करने वाले तथा 50 परंपरागत कृषि करने वाले कृषकों को सम्मिलित किया जा सकता है। कृषकों का चयन सीधी जिले के चयनित विकासखंडों एवं गाँवों से किया जाएगा। अंतिम नमूना चयन उपलब्ध जैविक कृषकों की संख्या और क्षेत्रीय परिस्थितियों के आधार पर किया जाना चाहिए।

आर्थिक विश्लेषण के प्रमुख संकेतक

1. कुल कृषि लागत।
2. प्रति हेक्टेयर उत्पादन।
3. सकल आय।
4. शुद्ध आय।
5. लाभ-लागत अनुपात।
6. कृषि से प्राप्त रोजगार एवं श्रम उपयोग।
7. विपणन लागत एवं उत्पाद का विक्रय मूल्य।

शुद्ध आय की गणना: शुद्ध आय = सकल आय − कुल कृषि लागत

लाभ-लागत अनुपात: लाभ-लागत अनुपात = सकल आय ÷ कुल कृषि लागत

परिणाम एवं चर्चा: प्रकाशित अध्ययनों के आधार पर विश्लेषण

जैविक कृषि और उत्पादन लागत

जैविक कृषि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता कम होने से कुछ परिस्थितियों में बाहरी कृषि निवेश की लागत घट सकती है। कृषक यदि अपने खेत पर उपलब्ध गोबर, फसल अवशेष, कम्पोस्ट तथा अन्य जैविक संसाधनों का उपयोग करते हैं, तो बाजार से खरीदे जाने

वाले निवेश पर खर्च कम हो सकता है। Reddy एवं सहयोगियों (2022) के अखिल भारतीय अध्ययन में जैविक कृषि की लागत में गेहूँ के लिए लगभग 13.7 प्रतिशत, धान के लिए 17.3 प्रतिशत तथा सोयाबीन के लिए 17.4 प्रतिशत की सापेक्ष कमी दर्ज की गई। यह निष्कर्ष संकेत देता है कि जैविक कृषि लागत कम करने में सहायक हो सकती है। हालांकि, इसे सीधी जिले के कृषकों पर सीधे लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि स्थानीय मिट्टी, फसल, श्रम और संसाधनों की उपलब्धता अलग हो सकती है।

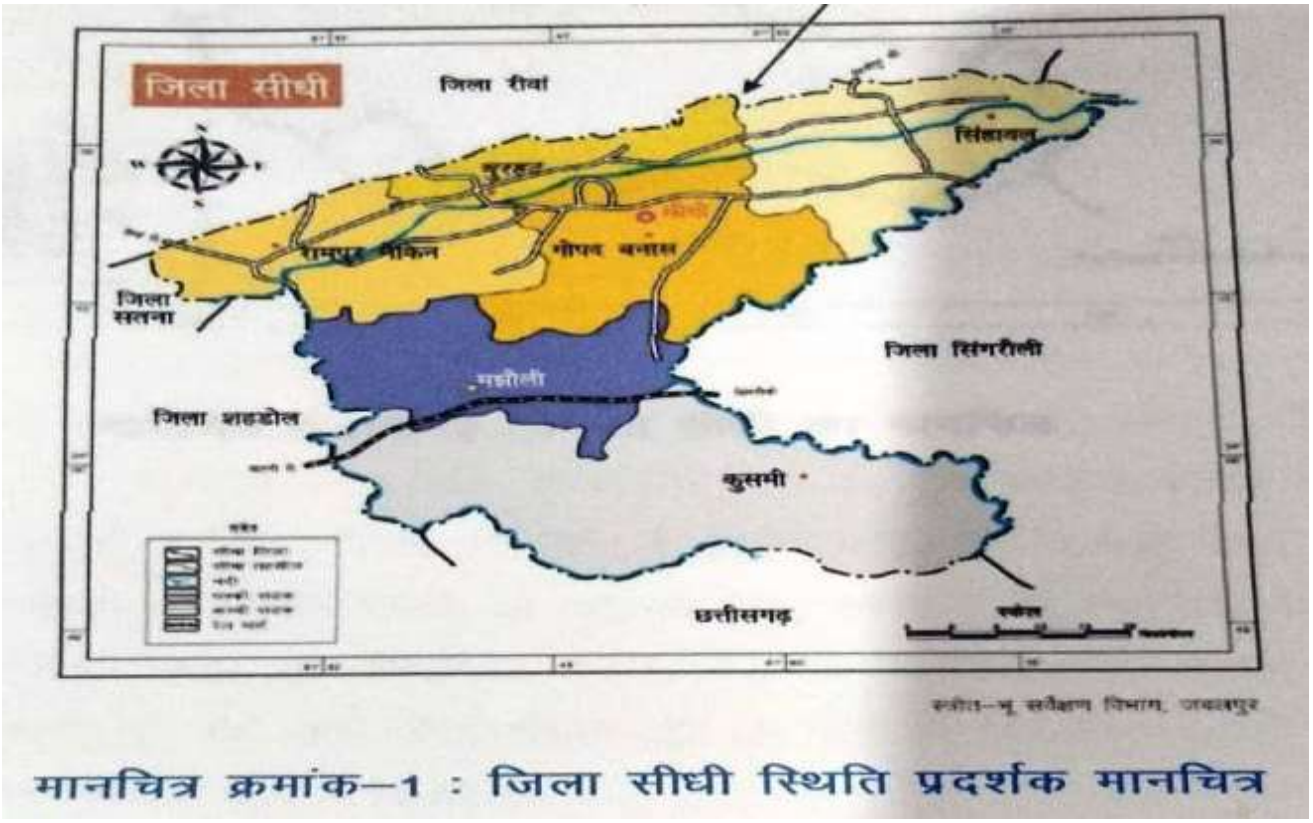

मानचित्र क्रमांक–1 : जिला सीधी स्थिति प्रदर्शक मानचित्र

जैविक कृषि और उत्पादन

जैविक कृषि अपनाने के प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है। इसका कारण मृदा की जैविक स्थिति में परिवर्तन, पोषक तत्त्वों की उपलब्धता, जैविक खाद की पर्याप्त मात्रा तथा कृषक के तकनीकी अनुभव से जुड़ा हो सकता है। Reddy एवं सहयोगियों (2022) के अध्ययन में गेहूँ, धान और सोयाबीन के उत्पादन में क्रमशः लगभग 12.8, 18.2 और 16.2 प्रतिशत की सापेक्ष कमी बताई गई। इसके विपरीत मध्यप्रदेश के 1,776 कृषकों पर आधारित Muthuprakash एवं सहयोगियों के अध्ययन में यह संकेत मिला कि उचित स्तर पर जैविक निवेश तथा बहुफसली प्रणाली के अंतर्गत उत्पादन बेहतर हो सकता है। दोनों अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि जैविक कृषि के उत्पादन परिणाम एकसमान नहीं हैं।

जैविक कृषि और कृषकों की शुद्ध आय

कृषकों की आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन केवल उत्पादन के आधार पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए कुल लागत, प्राप्त विक्रय मूल्य और शुद्ध आय का विश्लेषण आवश्यक है। यदि उत्पादन में थोड़ी कमी आती है, लेकिन कृषि लागत में

पर्याप्त कमी हो जाती है, तो कृषक की शुद्ध आय प्रभावित नहीं भी हो सकती है।

Reddy एवं सहयोगियों के अध्ययन में गेहूँ के लाभ में लगभग 0.2 प्रतिशत, धान में 5.6 प्रतिशत और सोयाबीन में 3.2 प्रतिशत की सापेक्ष वृद्धि बताई गई। ये निष्कर्ष सीमित फसलों और अध्ययन की निर्धारित अवधि से संबंधित हैं। इन्हें सीधी जिले के वास्तविक आर्थिक परिणाम के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए।

जैविक उत्पादों का बाजार मूल्य

जैविक कृषि की आर्थिक सफलता के लिए बाजार व्यवस्था अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यदि कृषक जैविक उत्पादों को सामान्य उत्पादों के समान मूल्य पर बेचने के लिए विवश हैं, तो उन्हें जैविक उत्पादन से मिलने वाला संभावित अतिरिक्त लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। दूसरी ओर, प्रमाणित जैविक उत्पादों की पहचान, उपभोक्ता विश्वास और अलग विपणन व्यवस्था होने पर बेहतर मूल्य मिलने की संभावना बढ़ सकती है। सीधी जिले में जैविक उत्पादों के लिए स्थानीय बाजार, किसान उत्पादक संगठन, सहकारी विपणन तथा प्रत्यक्ष उपभोक्ता संपर्क की संभावनाओं का क्षेत्रीय अध्ययन आवश्यक है।

जैविक कृषि और रोजगार

जैविक कृषि में कम्पोस्ट निर्माण, वर्मी कम्पोस्ट, जैविक कीट नियंत्रण, फसल चक्र तथा मिश्रित खेती जैसी गतिविधियों में अतिरिक्त श्रम की आवश्यकता हो सकती है। इससे ग्रामीण परिवारों के सदस्यों को कृषि कार्यों में अधिक अवसर मिल सकते हैं। हालांकि, अतिरिक्त श्रम की आर्थिक लागत को भी कृषि लाभ की गणना में शामिल करना आवश्यक है।

मध्यप्रदेश और सीधी जिले के संदर्भ में निष्कर्ष

मध्यप्रदेश में उपलब्ध आधारभूत अध्ययन जैविक एवं प्राकृतिक कृषि के परिणामों को स्थानीय कृषि-पारिस्थितिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझने की आवश्यकता पर बल देता है। सीधी जिले में छोटे एवं सीमांत कृषकों की उल्लेखनीय उपस्थिति को देखते हुए जैविक कृषि की उपयोगिता का मूल्यांकन करते समय कृषि लागत, उत्पादन, बाजार मूल्य, श्रम और संसाधनों की उपलब्धता को साथ-साथ देखना आवश्यक है। इस स्तर पर उपलब्ध द्वितीयक साहित्य जैविक कृषि की संभावनाओं का संकेत देता है, लेकिन सीधी जिले के कृषकों की वास्तविक आय में वृद्धि अथवा कमी का निष्कर्ष निकालने के लिए प्राथमिक सर्वेक्षण आवश्यक है।

जैविक कृषि अपनाने में प्रमुख समस्याएँ

1. जैविक खाद एवं जैव उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता का अभाव।
2. जैविक कृषि तकनीक के संबंध में सीमित जानकारी।
3. प्रारंभिक परिवर्तन अवधि में उत्पादन घटने की आशंका।
4. जैविक उत्पादों के लिए अलग बाजार की कमी।
5. प्रमाणन प्रक्रिया की जटिलता एवं लागत।
6. जैविक उत्पादों के उचित मूल्य की अनिश्चितता।
7. छोटे एवं सीमांत कृषकों के लिए प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता की सीमित उपलब्धता।

सुझाव

1. कृषकों को जैविक कृषि तकनीकों का नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
2. ग्राम स्तर पर वर्मी कम्पोस्ट एवं जैविक खाद उत्पादन इकाइयों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
3. जैविक उत्पादों के विपणन के लिए किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत किया जाना चाहिए।
4. छोटे एवं सीमांत कृषकों को जैविक कृषि अपनाने के लिए तकनीकी एवं वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
5. जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण और गुणवत्ता परीक्षण की सुविधाएँ सरल बनाई जानी चाहिए।

6. कृषि विभाग एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से प्रदर्शन प्लॉट और प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
7. जैविक कृषि को स्थानीय फसल प्रणाली, पशुपालन और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों से जोड़कर बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष:-

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जैविक कृषि कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावनाएँ प्रदान करती है, लेकिन इसका आर्थिक प्रभाव अनेक कारकों पर निर्भर करता है। जैविक कृषि में बाहरी कृषि निवेश पर होने वाला खर्च कम हो सकता है, परंतु उत्पादन में संभावित परिवर्तन, अतिरिक्त श्रम, जैविक खाद की उपलब्धता तथा बाजार मूल्य को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। अखिल भारतीय स्तर के अध्ययन में जैविक कृषि की लागत कम होने के साथ कुछ प्रमुख फसलों के उत्पादन में कमी तथा लाभ में सीमित परिवर्तन पाया गया है। मध्यप्रदेश के आधारभूत अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि जैविक कृषि का परिणाम अपनाई गई तकनीक, जैविक निवेश की मात्रा और फसल प्रणाली के अनुसार बदल सकता है।

सीधी जिले में जैविक कृषि की वास्तविक आर्थिक उपयोगिता जानने के लिए प्राथमिक सर्वेक्षण की आवश्यकता है। विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत कृषकों की लागत, उत्पादन, शुद्ध आय और बाजार तक पहुँच का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए। इस प्रकार जैविक कृषि को केवल पर्यावरण संरक्षण की पद्धति के रूप में नहीं, बल्कि स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित की जाने वाली संभावित आर्थिक एवं टिकाऊ कृषि प्रणाली के रूप में देखा जाना चाहिए।

संदर्भ सूची:-

1. Reddy, A. A., et al. (2022). Economic Impact of Organic Agriculture: Evidence from a Pan-India Survey. *Sustainability*, 14(22), 15057. https://doi.org/10.3390/su142215057
2. Muthuprakash, K. M., et al. (2025). Reframing the Narrative on Natural Farming Yields and Income: Insights from a Baseline Survey in Madhya Pradesh, India. *International Journal of Rural Management*. https://doi.org/10.1177/09730052241310930
3. NABARD. (2018–23). *Area Based Scheme: Dairy Development, Sidhi District, Madhya Pradesh*. National Bank for Agriculture and Rural Development.
4. Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India. जैविक कृषि एवं कृषि विकास से संबंधित विभिन्न सरकारी प्रकाशन।
5. Government of Madhya Pradesh. कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की उपलब्ध रिपोर्टें और प्रकाशन।

.